ISSN 2231-1629
Knowledge Resonance

IMPACT FACTOR 8.072
January - June 2021- Vol. 10 No. 1

नागपूर जिले में नगरीय वृद्धि व नगरीय आवासीयता

संशोधन विद्यार्थी
स्वाती रमेश भोवते
वसंतराव नाईक शासकीय
कला व समाजविज्ञान संस्था, नागपूर.

संशोधन मार्गदर्शक
डॉ. अविनाश व. तलमले
सहाय्यक प्राध्यापक (भूगोल) वसंतराव नाईक शासकीय कला व समाजविज्ञान संस्था, नागपूर.

★★★

सारांश – विश्व में नगरीकरण यह हर विकसित व विकासशील देश में तीव्रता से हो रहा है। नगरीय जनसंख्या में वृद्धि का मुख्य कारण ग्रामीण भागों से नगरीय भागों में स्थानांतरण है। इस नगरीय जनसंख्या वृद्धि का परिणाम नगरीय आवासीयता पर पड़ता है, नगरों का भूमि उपयोग व भूमि आवरण का स्वरूप बदलता जाता है। नगरो की जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ती जाती है किंतु जनसंख्या वृद्धि के अनुपात में नगर में आवासो की संख्या नहीं बढ़ पाती जिसका परिणाम होता है घरो का अभाव तथा आवासीय समस्या। आवास की समस्या अन्य परेशानीया उत्पन्न करती हैं। नागपूर शहर का तेजी से नगरीकरण हो रहा है। परन्तु अभी तक यहा पुणे व मुम्बई जैसी परिस्थिती उत्पन्न नही हुई है। नागपूर को अभी ध ाारणीय विकास द्वारा सुनियोजित कर विकसीत किया जा सकता है ताकि यहा अन्य महानगरो जैसी समस्याए उत्पन्न ना हो। यह अध ययन नागपूर जिले व नागपूर शहर में नगरीय जनसंख्या वृद्धि, क्षेत्रफल वृद्धि तथा आवासों की संख्या में वृद्धि के संबंध की चर्चा करता है।

मुख्य ाब्द : नगरीकरण की प्रवृत्तिए नगरीय जनसंख्या, नगरीय क्षेत्रफल, आवासीयता

प्रस्तावना – किसी भी राष्ट्र की बहुमूल्य साधन संपत्ती वहां रहने वाले मानव संसाधन होते हैं, अतः मानव जैसे महत्वपूर्ण साधन के विकास के लिए जमीन की आवश्यकता होती है। आवास मानव की मूल आवश्यकताओं में से एक है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रत्येक दशक के दौरान जनसंख्या तथा आवासीय गणना की प्रक्रिया को विष्व भर के सभी देशों में लागू करने की अनिवार्यता पर बल दिया गया है। नगरीकरण यह आवासीयता को प्रभावित करता है। नगरीय जनसंख्या की वृद्धि का कारण सीमा परिवर्तन, जनगणना शहरो की संख्या में वृद्धि, नगरीय सीमांत क्षेत्र में वृद्धि, ग्रामीण नगरी स्थानांतरण, नगरीय जनसंख्या की प्राकृतिक वृद्धि आदि है। जनसंख्या वृद्धि उस प्रदेश की

भूमि उपयोग को प्रभावित करती है।

2 नगरीकरण :– नगरीकरण का सामान्य अर्थ है नगरीय वृद्धि। यह एक बहुविषयी शब्द है जिसका प्रयोग विशयानुकूल विविध अर्थो में किया जाता है। अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री, नगर नियोजक, भूगोलवेत्ता तथा अन्य समाज विज्ञानी नगरीकरण शब्द का प्रयोग विभिन्न अर्थो एवं संदर्भो में करते हैं। (Mourya, S. D. 2013) नगरीकरण नगरीय होने या बनाने, नगरोन्मुख गति और प्राथमिक व्यवसाय तथा ग्राम्य जीवन पद्धति से द्वितीयक एवं तश्तीयक व्यवसाय तथा नगरीय जीवन पद्धति में परिवर्तन की सामान्य प्रक्रिया है। मिचेल (J-C-Mitchell) के शब्दों में "नगरीकरण ग्राम्य अधिवासो से नगरों के रूप में कायांतरण की एक समन्वित विधि है जिसके परिणामस्वरूप ग्रामीण अधिष्ठानो, व्यवसाय तथा अर्थव्यवस्था, क्षेत्र या भूमि उपयोग, समाज व संस्कृति, जीवन तथा रहन–सहन के स्तर और अन्य मानव मूल्यों के गुणात्मक तथा परिणामात्मक परिवर्तन क्रमशः स्पष्ट होने लगते हैं।" नगरीकरण जनसंख्या के नगरी होने से संबंध रखता है यह नगरीय जनसंख्या जिन विभागों पर रहने लगती है, वह नगरीय भूभाग कहलाता है। वास्तव में नगरीय जनसंख्या व उसके अनुपात में वषद्धि होना नगरीकरण कहलाताहै।

ग्रिफिथ टेलर– ने बताया है कि गांव से नगरों की को जनसंख्या का स्थानांतरण ही नगरीकरण कहलाता है। यदि नगरों की जनसंख्या में उतनी ही या उससे कम वृद्धि होती है, जितनी की वृद्धि ग्रामों की जनसंख्या में होती है, तब ऐसी दशा में यह नहीं कहा जा सकता कि नगरीकरण में कोई वृद्धि हुई है ।

3. आवास :– गृह या आवास मनुष्य की पाँच प्राथमिक आवश्यकताओं में से एक है। प्रत्येक व्यक्ति तथा परिवार को रहने के लिए कार्य करने के लिए वस्तुओं को रखने के लिए तथा अन्य आवश्यक कार्यों के लिए आवास की आवश्यकता होती है। घरो के आकार प्रकार व्यक्ति कि आर्थिक सामाजिक स्थिति के अनुसार विभिन्नता पूर्ण होते हैं। उस समाज या देश में जीवन की गुणवत्ता उच्च मानी जाती है, जहां अधिकांश या सभी लोग के रहने के लिए सुविधाजनक आवास उपलब्ध हो। मकान से अभिप्राय उन सभी संरचनाओं से हैं जिसका प्रयोग रहने, कार्य करने तथा वस्तुओं को संग्रह करने में किया जाता है। (पी. डब्लू. ब्रायन)

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर UN-Habitat (United Nation human settlements program) कार्यरत है। UN-Habitat के अनुसार विश्व में 100 करोड लोग आज भी आवास से वंचित है। भारत सरकार बेघर लोगों के लिए सामाजिक दरिद्रता दूर करने का प्रयास करती आयी है, जिसका शुभारंभ भारत की पहली पंचवर्षीय योजना के साथ हुआ तब से केंद्र व राज्य सरकार निराश्रित परिवारों को आश्रय प्रदान करने का कार्य गंभीरता से निभा रही हैं।

नगरों विशेषतः वृहद नगरों में प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में लोग ग्रामीण क्षेत्रों अथवा अन्य बाहरी क्षेत्रों से आकर रहने लगते हैं, जिससे नगर की जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ती जाती है। किंतु जनसंख्या वृद्धि के अनुपात में नगर में गृहों की संख्या नहीं बढ़ पाती जिसका परिणाम होता है गृहों का अभाव तथा आवासीय समस्या। अल्पाय अथवा बेरोजगारी के कारण प्रायः सभी बड़े नगरों में हजारों लाखों लोग गंदी बस्तियों तथा झुग्गी बस्तियों और फुटपाथ पर सोने के लिए विवश होते हैं। गंदी बस्तियां तथा मलिन बस्तियां औद्योगिक नगरों में अधिक पाई जाती है। मलिन बस्तियों में नगरीय सुविधाओं का अभाव पाया जाता है। नगरों की खाली पड़ी हुई सरकारी या सार्वजनिक भूमि पर असामाजिक तत्व या निर्धन वर्ग के लोग जबरदस्ती कब्जा कर लेते हैं और उस पर झुग्गी झोपड़ी बना लेते हैं। जहां पीने के पानी, बिजली, शौचालय, सड़क आदि की व्यवस्था प्राय नहीं होती और गंदगी के कारण वातावरण रहने योग्य नहीं होता हैं। गंदगी के कारण इन मलिन बस्तियों में तरह–तरह की बीमारियां फैलती हैं।

4 उद्देश्य :– 1. नागपूर जिले में नगरीकरण की प्रवृत्ति का अध्ययन करना।

2. नागपूर जिले व नागपूर शहर में नगरीय क्षेत्रफल वृद्धि का अध्ययन करना।

3. नागपूर जिले व नागपूर शहर में आवासों की संख्या में वृद्धि का अध्ययन करना।

5 शोध विधि तंत्र व आंकड़े स्त्रोत :– नागपूर जिले के नगरीय प्रभागों के कालीक अध्ययन के लिए द्वितीय स्वरूप के आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। नगरीय जनसंख्या संबंधी सांख्यिकीय आंकड़े नागपूर जिले के जिला जनगणना निर्देशांक 1961 से 2011 में से लिये गये है। अध्ययन के महत्व को देखने हुए विविध पुस्तक, वर्तमान पत्र, साप्ताहीक व संकेत स्थल का आधार लिया गया है। नगरीय जनसंख्या वृद्धि, नगरीय क्षेत्रफल वृद्धि व नगरी आवासों की संख्या में के बीच कार्ल पियर्सन कि सहसंबंध गुणांक विधि (Sharma, J. P. 2018) द्वारा सहसंबंध निकाला गया है।

6 अध्ययन क्षेत्र :– 1 मई 1960 को महाराष्ट्र राज्य की निर्मिती के बाद नागपूर संधी अनुसार नागपूर को उप राजधानी का स्थान प्रदान किया गया। नागपूर जिला उत्तरी अक्षांश 20.35′ से 21.44′ और पूर्वी देशांतर 78.15′ से 79.40′ के बीच फैला हुआ है। नागपूर जिले का क्षेत्रफल 9892 वर्ग किलोमीटर है, जो महाराष्ट्र के क्षेत्रफल का 3.22: है। 1 मई 1981 के बाद जिले की पुनः रचना की गई तथा कुल 14 तहसीलें बनाई गई। 2011 की जनगणना के अनुसार, इस जिले की जनसंख्या 46,53,570 है। जिले की कुल जनसंख्या में से, 68.3: जनसंख्या शहरी और 31.7: जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में है। नागपूर महाराष्ट्र के अन्य औद्योगिक शहरों में से एक है। नागपूर जिले में औद्योगीकरण प्रमुख रूप से नगरीय भाग में ही पाया जाता है।

2. नागपूर जिले में नगरीकरण की प्रवृत्ति 1961 के जनगणना के समय नागपूर जिले में 5 तहसीलों का समावेश था तथा 12 शहर थे। 1981 में शहरो की संख्या 16 हो गई, 1991 में नागपूर जिले में तहसीलों की संख्या 14 हो गई, तब यहां 23 शहर थे। 2001 की जनगणना अनुसार 29 शहर तथा 2011 की जनगणना अनुसार 41 शहर नागपूर जिले में है।

नागपूर जिले में नगरीकरण की प्रवृत्ति
तालिका क्रमांक 1

वर्ष	कुल जनसंख्या	जनसंख्या वृद्धि दर	ग्रामीण जन संख्या	ग्रा. ज. प्रतिशत	नगरीय जनसंख्या	न. ज. प्रतिशत	न. ज. वृद्धि दर
1901	748489	–	508101	67.88	240388		32.1
1911	806287	7.72	611384	75.83	194903	24.2	–18.92
1921	789940	–2.03	549956	69.62	239984	30.4	23.13
1931	936987	18.61	613642	65.49	323345	34.5	34.74
1941	1056537	12.76	638356	60.42	418181	39.6	29.33
1951	1230535	16.47	652885	53.06	577650	46.9	38.13
1961	1508455	22.59	720755	47.78	787700	52.2	36.36
1971	1942688	28.79	887331	45.68	1055357	54.3	33.98
1981	2588811	33.26	1119532	43.25	1469279	56.8	39.22
1991	3287139	26.97	1256225	38.22	2030914	61.8	38.23
2001	4067637	23.74	1453886	35.74	2613751	64.3	28.70
2011	4653570	14.40	1474811	31.69	3178759	68.3	21.62

स्त्रोतः जिला जनगणना निर्देश ग्रंथ 2001 व 2011

तालिका क्रमांक 1 के अनुसार 1901 में नागपूर जिले में कुल जनसंख्या में 67.88: ग्रामीण जनसंख्या तथा 32.21: नगरीय जनसंख्या थी। 1911 में ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत बढ़ गया 75. 0: तथा नगरीय जनसंख्या 24.2: थी, परंतु 1911 के बाद 1921 से ग्रामीण जनसंख्या प्रतिशत निरंतर कम होते गया तथा नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत निरंतर बढ़ता गया। 1901 और 2011 की जनसंख्या को ध्यान से देखें तो 2011 में जितनी नगरीय जनसंख्या 68.3: है उतनी 1901 की ग्रामीण जनसंख्या 67.8: थी तथा 2011 में जितनी ग्रामीण जनसंख्या 31.6: है उतनी 1901 में नगरीय जनसंख्या 32.1: थी।

नगरीय जनसंख्या की प्रतिशत वृद्धि 1901–1911 में ऋणात्मक –18.92: थी। 1921– 1931 में प्रतिशत वृद्धि क्रमशः 23.13: व 34. 74: थी। तथा 1981 से 2011 तक नगरीय जनसंख्या प्रतिशत वृद्धि क्रमशः कम होती जा रही है। यदि नागपूर जिले के प्रारंभिक दशकों की जनसंख्या की ओर ध्यान केंद्रित किया जाए तो 1901 से 1941 तक जनसंख्या वृद्धि दर कम या ऋणात्मक ही रहे हैं । इसका कारण उस समय 1901–1911 भारत में फैली प्लेग व 1911–21 इनफ्लुएंजा की बीमारी 1931–1941 मे विश्व युद्ध है जिस कारण जनसंख्या की बहुत हानी हुई थी। (Chandana, R. C. 2012) 2001 की जनगणना अनुसार नागपूर शहर कुल नगरीय जनसंख्या का 79: तथा 2011 में 76: है। नागपूर शहर जनसंख्या को ज्यादा आकर्षित कर रहा है, इसका मुख्य कारण रोजगार उपलब्धता, शिक्षा व स्वास्थ्य सुविधा, परिवहन सुविधा आदि के कारण हो रहे स्थानांतरण है।

3. नागपूर जिले में नगरीय जनसंख्या, नगरीय क्षेत्रफल, आवासीयता भौतिक दृष्टिकोण से नगरीय निर्मित क्षेत्र या नगरीय क्षेत्रफल में वृद्धि नगरीकरण का सर्वाधिक मूर्त तथा स्पष्ट सूचक है। इसके अंतर्गत नगरीय भूमि उपयोग या निर्मित क्षेत्र में विस्तार के साथ ही वृद्धि को भी सम्मिलित किया जाता है। (Bansal, S. C.

नागपूर जिले में नगरीय जनसंख्या, नगरीय क्षेत्रफल, आवासीयता
तालिका क्रमांक 2

वर्ष	नगरीय जनसंख्या	नगरीय क्षेत्रफल वर्ग कि.मी	घरों की संख्या
1961	787700	334.2	161788
1971	1055357	334.6	144826
1981	1469279	331.2	266625
1991	2030914	364.7	394219
2001	2613751	410.1	524240
2011	3178759	482.9	701547

स्त्रोतः जिला जनगणना निर्देश ग्रंथ 1961–2011

तालिका क्रमांक 2 के अनुसार नागपूर जिले में 1961 में नगरीय जनसंख्या 78700 तथा घरों की संख्या 161788 थी व नगरीय क्षेत्रफल 334.2 वर्ग कि.मी. था। 2011 में घरों की संख्या बढ़कर क्रमशः 3178759, व क्षेत्रफल 482.9 वर्ग कि.मी. हो गया। नागपूर जिले में नगरीय जनसंख्या बढ़ने के साथ ही क्षेत्रफल में भी वृद्धि हुई है तथा घरों की संख्या में भी वृद्धि हुई है। 1961 से 2011 तक नगरीय जनसंख्या एवं नगरी क्षेत्रफल के बीच सहसंबंध गुणांक +0. 88 है, जो उच्च धनात्मक सहसंबंध दर्शाता है। अर्थात जैसे–जैसे नगरीय जनसंख्या में वृद्धि हो रही है, उसी के साथ नगरीय क्षेत्रफल में भी वृद्धि हो रही है। जिले के नगरीय क्षेत्रफल बढ़ने का मुख्य कारण गावो का जनगणना शहर मे रुपान्तरण हैं। जो नगरीय जनसंख्या व नगरीय क्षेत्रफल मे वृद्धि करते हैं। उसी प्रकार नगरीय क्षेत्रफल व घरों की संख्या में सहसंबंध गुणांक +0.93 है। जो कि उच्च ानात्मक सहसंबंध दर्शाता है। नगरीय जनसंख्या व घरों की संख्या में सहसंबंध गुणांक +0.99 है। जो कि उच्च धनात्मक सहसंबंध दर्शाता है।

4. नागपूर शहर में नगरीय जनसंख्या, नगरीय क्षेत्रफल, आवासीयता नागपूर जिले के नगरीय जनसंख्या में नागपूर महानगरपालिका में जनसंख्या का संकेंद्रण अधिक है इसलिए नागपूर शहर की जनसंख्या, आवासीयता व क्षेत्रफल का अध्ययन आवश्यक है।

नागपूर शाहर में नगरीय जनसंख्या, नगरीय क्षेत्रफल, आवासीयता तालिका क्रमांक 3

वर्ष	जनसंख्या	क्षेत्रफल वर्ग कि.मी	घरों की संख्या	कुल नगरीय जनसंख्या मे नागपूर शहरी जनसंख्या प्रतिशत
1961	643659	217.56	132062	81.71
1971	866076	217.56	134439	82.06
1981	1219461	217.56	222179	83.00
1991	1624752	217.56	314091	80.00
2001	2052066	217.56	409924	78.51
2011	2405665	217.56	527634	75.68

स्त्रोतः जिला जनगणना निर्देश ग्रंथ 1961–2011

तालिका क्रमांक 3 के अनुसार नागपूर जिले में नगरीय जनसंख्या का संकेंद्रन नागपूर शहर में दिखाई दे रहा है। 1961 से 2011 तक अकेले नागपूर महानगरपालिका में ही पूरे जिले की नगरीय जनसंख्या की लगभग तीन चौथाई जनसंख्या निवास करती आयी है। नगरीय जनसंख्या व नगरीय घरों की संख्या में सहसंबंध गुणांक +0.99 उच्च धनात्मक सहसंबंध है परंतु नगरीय क्षेत्रफल व घरों की संख्या में –0.07 ऋणात्मक सहसंबंध है।

नागपूर शहर के क्षेत्रफल व घरों की संख्या में ऋणात्मक सहसंबंध ा है। 1961 से 2011 तक नागपूर शहर का क्षेत्रफल तो लगभग उतना ही है, परंतु आवासों की संख्या में वृद्धि हो रही है अर्थात नागपूर शहर में जनसंख्या दबाव बढ़ता जा रहा है।

6. निष्कर्श :– प्रस्तुत संशोधन के अध्ययन व परिक्षण से यह निष्कर्श निकलता हैं कि जनसंख्या वृद्धि, क्षेत्रफल वृद्धि, घरों की संख्या में वृद्धि यह सभी घटक आपस में संबंधित व एक दूसरे पर निर्भर है। जनसंख्या को कार्य करने के लिए जमीन की आवश्यकता होती है, इसलिए बढ़ती जनसंख्या भूमि की मांग कर क्षेत्रफल बढ़ाती है तथा भूमि उपयोग व भूमि आवरण को प्रभावित करती है। आवासीयता उसका एक उदाहरण है। नागपूर जिले मे आवासो की संख्या, जनसंख्या के साथ बढ़ रही है अर्थात हम कह सकते है कि अभी जनसंख्या वृद्धि के सकारात्मक परिणाम हि दिखाई दे रहे हैं। परंतु नागपूर महानगरपालिका में नागपूर जिले के नगरीय जनसंख्या क ी आधे से अधिक जनसंख्या निवास करती है तथा उतने ही नगरीय क्षेत्रफल में आवासों की संख्या बढ़ती जा रही है। अकेले नागपूर शहर में जनसंख्या का संकेंद्रण समस्याओं को उत्पन्न कर सकता है। इसके लिए जनसंख्या के विकेंद्रीकरण, उपनगर का निर्माण आदि उपाय योजनाओं की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *Bansal, S. C. (2008). Urban Geography. Merath: Minakshi publication.*
2. *Chandana, R. C. (2012). A Geography Of Population. New Delhi: Kalyani Publication.*
3. *(1961-2011). District Census Handbook Nagpur. Census of India.*
4. *M Spence, P. C. (2009). Urbanization and Growth. Commission on Growth and Development.*
5. *Mourya, S. D. (2013). Population Geography. Alahabad: Sharda Publication.*
6. *Report, W. C. (2016). Urbanization and Development: Emerging Futures. United Nations Human Settlements Programs.*
7. *harma, J. P. (2018). Practical Geograpphy. Merath: Rastogi Publication.*